UNIVERSAL LIBRARY
OU_182987
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—43—30-1-71—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 D99C Accession No. H1963

Author द्विवेदी, सोहनलाल

Title चेतना - 1954 -

This book should be returned on or before the date last marked below

चेतना

सोहनलाल द्विवेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), लिमिटेड, प्रयाग
१९५४ मूल्य २)

मुद्रक—पी० एल० यादव, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

विज्ञप्ति

आलोचकों का मत है कि मैंने अपनी रचनाओं से गांधीजी को बहुत ऊपर उठा दिया है। किन्तु, बात तो इसके प्रतिकूल है। सच तो यह है कि बापू ने मेरी रचनाओं को ऊपर उठा दिया है। मेरी काव्य-साधना गांधीजी को आराध्य देवता मानकर धन्य हो गई है।

मैं मानता हूँ कि गांधीजी को ही केन्द्रबिन्दु मानकर विगत कई युगों से राष्ट्र की चेतना परिधि बनकर घूमती रही है। मैं मानता हूँ मेरी रचनाओं की जो भी महत्ता है, वह उनकी ही भक्ति का प्रसाद है, और उनमें जो लघुता है, वह मेरी अपनी है।

चिरकाल से जिन सहृदय पाठकों को मेरे नवीन प्रकाशन का अभाव अनुभव होता रहा है, मुझे विश्वास है कि वे चेतना को पाकर प्रसन्न होंगे।

१५ अगस्त, १९५४
बिन्दकी
उत्तर प्रदेश

सोहनलाल द्विवेदी

स्नेहोपहार

उस परिचय को, जो परिचय से प्यार बन गया,
उस सहृदय को, जो जीवन-आधार बन गया,
उस अनाम को, जो अधरों का नाम बन गया,
पुरुष नहीं, जो पुरुषोत्तम अभिराम बन गया

उन्हीं

पुरुषोत्तमदास टंडन

राजा मुनुवा

को

सस्नेह भेंट

सोहनलाल द्विवेदी

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
१—तिरङ्ग ध्वज	...	१
२—अर्ध-नग्न	...	३
३—राष्ट्रदेवता	...	७
४—उपवास	...	११
५—नीराजना	...	१३
६—असमय संघर्ष	...	१४
७—तरुणाई का तकाज़ा	...	१७
८—तुझे शपथ है	...	१६
९—लौहपुरुष !	...	२१
१०—सावधान !	...	२२
११—अखंड ज्योति	...	२३
१२—मंगल गीत	...	२५
१३—स्वतंत्रता के पुण्य पर्व पर		२७
१४—यह स्वतंत्रता की अरुण उषा		२९
१५—गीत	...	३२
१६—मुक्तिपर्व	...	३४
१७—जयकेतन	...	३६
१८—वज्रपात	...	३८
१९—महानिर्वाण	...	४०
२०—आज राष्ट्र के कण कण को गांधी की मूर्ति करेंगे हम !		४३
२१—उद्बोधन	...	४६

विषय		पृष्ठ
२२—वह बापू की आत्मा बोली		४८
२३—कैसा वसन्त कैसी होली !		५०
२४—श्रद्धांजलि	...	५२
२५—पन्द्रह अगस्त	...	५४
२६—विजय पर्व	...	५६
२७—हर हर महादेव जय जय !		५९
२८—राजर्षि राष्ट्रपति	...	६१
२९—राष्ट्र-ध्वजा	...	६४
३०—दीपाली	...	६७

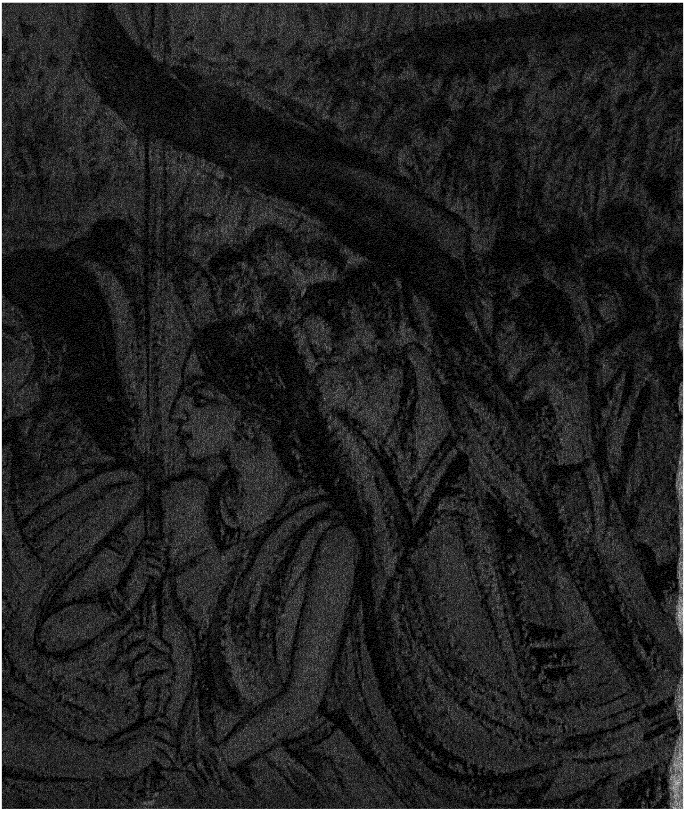

लहरे तिरंग ध्वज अपना--चित्र : सुधीर खास्तगीर के सौजन्य से

तिरङ्ग ध्वज

लहरे तिरङ्ग ध्वज अपना।
जिसने सत्य बना दिखलाया
आजादी का सपना।

जिस जयध्वज को पाकर आगे,
सोये भाग्य हमारे जागे,

दूर हुए सदियों के बन्धन,
रोना और कलपना!
लहरे तिरंग ध्वज अपना!

जिस जयध्वज के अरुणांचल में,
कोटि-कोटि जनगण आ पल में,

किये अनेकों युद्ध, विजय के
लिये न पड़ा ठहरना।
लहरे तिरंग ध्वज अपना!

वह ध्वज ले अभियान करेंगे,
हम नूतन निर्माण करेंगे,

वह अजेय भारत, जो हो
भूतल के सुख का पलना।
लहरे तिरंग ध्वज अपना!

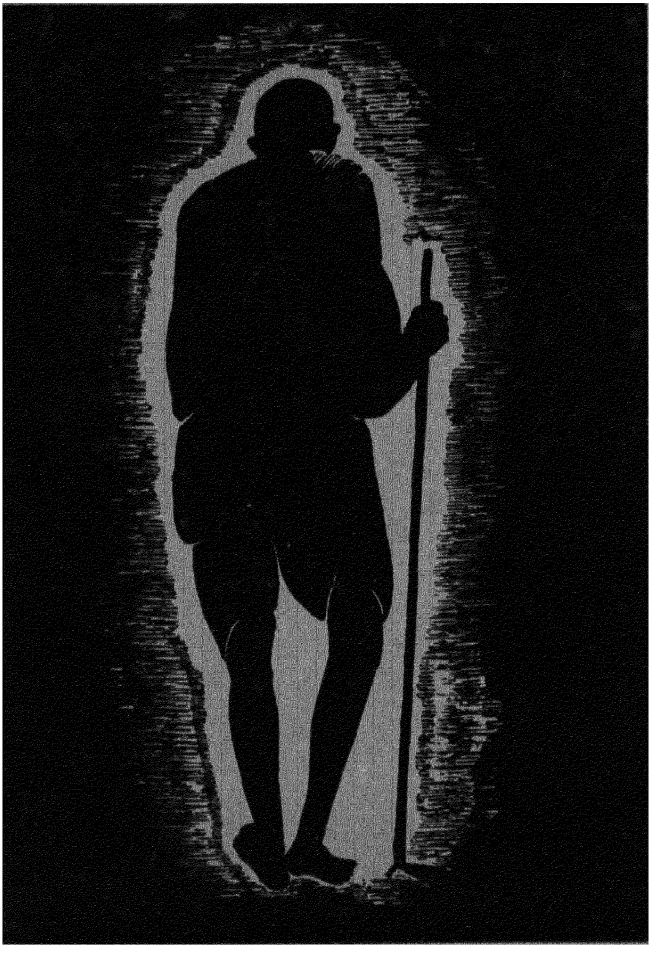

राष्ट्रदेवता

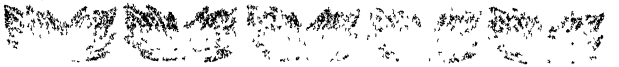

अर्ध-नग्न

(एक बार गांधीजी मद्रास की ओर एक गाँव में गये। वहाँ उन्होंने एक स्त्री को मैले-कुचैले कपड़े पहने देखा। गांधीजी वहीं रुक गये, और उन्होंने उस स्त्री से इतने गन्दे रहने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा कि उसके पास एक ही धोती है, और गाँव में कहीं पानी नहीं है इसलिए कपड़े साफ करने का अवसर नहीं मिलता। उसने यह भी कहा कि आप बड़े आदमी हैं, हम गरीबों का दुःख नहीं जान सकते। हमारे जैसे करोड़ों बहनें भाई इसी प्रकार रहते हैं। गांधीजी को स्त्री की बात घर कर गई और गांधीजी सहम गये। और उन्होंने व्रत लिया कि जब तक देश के सभी भाई बहन पूरे कपड़े नहीं पहनेंगे, तब तक वे भी शरीर में आधे कपड़े पहनेंगे, एक लँगोटी भर लगायेंगे। गांधीजी ने स्त्री को समझाया कि यदि वह चरखा कातना प्रारम्भ करे, तो देश की सभी गरीबी दूर होगी। पता नहीं, उस स्त्री ने चरखा चलाया या नहीं किन्तु उस दिन से गांधीजी ने लँगोटी पहनकर ही जीवन बिताया।)

चर्चा और अर्चा है जिसकी आज घर घर
गाता है गीत मुग्ध - मानव का स्वर स्वर,
उसके ही चरित्र का पवित्र यह आख्यान
लघु सा उपाख्यान—

साबरमती का संत
जिसका गौरव अनंत
पहुँच गया एक बार, एक ग्राम,
जल का था जहाँ न नाम

देखा खड़ी वहीं एक
अन्त्यज अछूत नारी
जैसे आपदा की मारी
दुर्गंधित
परिधान
जैसे हो मलिनता स्वयं बनी मूर्तिमान !

आगे सन्त बढ़ न सका
आगे चरण पड़ न सका,
रुक गय वहीं अधीर
गूँजी वाणी गंभीर—

'भद्रे ! क्यों मलिन तुम
दुर्गंधित वेश धरे
युग युग के क्लेश धरे ?
स्वच्छता सभी विसार
रहती क्यों इस प्रकार ?'

नारी कुछ ठिठकी,
निज लघुता का हुआ भान,
अपनी मलिनता दरिद्रता का हुआ ज्ञान

लज्जा से नीचे गड़ी चुपचाप
सोचती रही कुछ पाण खड़ी आप,
खुलते ही कंठ-स्वर
फूटे नयन निर्झर
बोली—
'महाराज ! बड़े लोग आप,
दीन हीन जनों का है जीना भी अभिशाप ।

धोती यही एकमात्र
जिससे ढँके रहती गात्र,
पहनती इसे ही दस वर्षों से लगातार,
और कुछ नहीं, इसके भी हुए तार तार,

मिल गया जल कहीं यदि सौभाग्य से
धोती पहले एक छोर,
उससे लपेट तन,
धोती हूँ फिर और छोर !
मैं ही नहीं—मेरी ही तरह और
कोटि कोटि बहने हैं, भाई हैं ठौर ठौर ।
खाते कौर गिन गिन
काट रहे मुझसे ही अपने जिन्दगी के दिन !'

सिहर गई आत्मा, अस्थिर महात्मा !

अपने उत्तरीय को निकाल
नारी पर दिया डाल,
प्राणों की गहन पीर, बोल उठी हो अधीर—

'कातो सूत मेरी बहन,
व्रत यह करो ग्रहण

होगा सभी कष्ट दूर,
होगी सुख से भी भरपूर !'

बापू ने किया संकल्प, चले जो कि कल्प कल्प।
'जब तक कोटि भाई, बहन
रहते हैं यों अ-वसन,
उनसा रहूँगा मैं भी, सुख दुख सहूँगा मैं भी;'

सेवाग्राम का यह यती, तब से अर्ध-नग्न व्रती,
जिसकी नित्य जनता उतारती है आरती।
गाते गीत नहीं कभी थकती है भारती ॥

राष्ट्रदेवता

किस भाषा में करूँ आज मैं,
देव, तुम्हारा वंदन ?

शब्द नहीं कर पाते हैं,
समुचित सम्मान तुम्हारा,
भाव मूक हो जाते हैं
गाते गुणगान तुम्हारा,
छंद मंद पड़ जाते हैं
रुक जाती है स्वर धारा,

उठ-उठकर झुक-झुक जाता,
मेरी वीणा का कंपन!
किस भाषा में करूँ आज मैं
देव तुम्हारा वंदन ?

युग-युग घेरे रहा गगन बन
हमको सघन अँधेरा,
था संदेह न कभी उदित
होगा फिर सुखद-सवेरा,
तुमने अपना पुण्यपाणि
ऐसा पापों पर फेरा,

कल की रौरव भूमि बन गई,
आज स्वर्ग का नन्दन!
किस भाषा में करूँ आज मैं,
देव तुम्हारा वंदन ?

सत्य अहिंसा के चक्रों में
सज्जित सुरथ तुम्हारा,
आगे बढ़ा अहर्निशि ले
आत्मा की उज्ज्वल धारा,
गति अबाध रुक सका न रोके,
तुम जीते, जग हारा।

कोटि-कोटि कर में लहराने
लगे विजय के केतन!
किस भाषा में करूँ आज मैं
देव तुम्हारा वंदन ?

तुमने तो सच कर दिखलाया
अपने मन का सपना,
आज धरा अपनी, नभ
अपना, और राज है अपना;
आज अधर मुसकान बनी है
कल का रुदन कलपना।

अंगारे बन गये आज तो
सुखद मलयगिरि चंदन!
किस भाषा में करूँ आज मैं
देव! तुम्हारा वंदन?

लिखे तुम्हारी कथा कौन, जो
तुम-सा महत बड़ा हो,
जो तुम सा ही ज्वालागिरि के
मुख पर हुआ खड़ा हो,
पल-बल महाकाल से आगे
बढ़ बढ़ सतत लड़ा हो।

सागर की तो थाह नाप
सकती, सागर की धड़कन!
किस भाषा में करूँ आज मैं
देव! तुम्हारा वंदन?

एकबार क्या, कई बार
तुमने पी-पी विष प्याला,
जलती हुई जाति का संकट
अपनी बलि से टाला,
हुये स्वयं बलिदान
विश्व-प्राणों में अमृत ढाला।

विश्व चकित रह गया देख, यह
पल-पल प्राण समर्पण!
किस भाषा में करूँ आज मैं
देव! तुम्हारा वंदन?

धन्य धरा यह आज कि जिसमें
तुमने जन्म लिया है,
धन्य जाति यह आज कि
जिसको तुमने मुक्त किया है,
धन्य राष्ट्र यह आज कि जिसको
तुमने शीश लिया है।

तुम्हें देख कर किया विश्व
ने बोधिसत्त्व का दर्शन!
किस भाषा में करूँ आज मैं,
देव! तुम्हारा वंदन?

उपवास

किया जब जब तुमने उपवास
बल से नहीं, किन्तु निज बलि से
बदल दिया इतिहास!

हम अकुलाये धाये, जन जन
जीवन बना अधीर,
पर, दिन दिन तब तेज रश्मि
चमकी बन गहन गँभीर!

शूची भेदी अंधकार क्रम क्रम
से हुआ विनाश!
खिला तृणा-तृणा में पुलय प्रकाश!
किया जब जब तुमने उपवास!

पशुपति! वह अमोघ शर तुमने
किया जहाँ संधान!
अग-जग लगा काँपने थर-थर
काँपे भू के प्राण!

गरल घूँट पी स्वयं अमृत से
भरा धरा आकाश!
मृत्यु का कर पद पद उपहास!
किया जब जब तुमने उपवास!

हिंसा के अकांड तांडव पर,
टूटा उल्कापात,
घिरे मेघ हट गये गगन से
देख वज्र संघात!

छिटकी शुभ्र चाँदनी जीवन
में ले प्रेम विकास,
शान्ति की मिला मधुर आवास!
किया तुमने जब जब उपवास!

मिटे कलह कोलाहल क्रन्दन
दुख अवसाद विषाद,
वितरे चिर सुख शान्ति विश्व को
तव तप पुण्य प्रसाद;

आत्म-प्रज्ञ, तुम धन्य! धन्य तव
आत्माहुति अभ्यास!
हरे जगती का संकट त्रास।
तुम्हारा यह पावन उपवास!

नीराजना

देवता नव राष्ट्र के नवराष्ट्र की नव अर्चना लो
विश्व वन्द्य वरेण्य बापू ! विश्व की नव वंदना लो

पा तुम्हारा स्नेह धागा,
यह अभागा देश जागा
जागरण के देवता ! नव जागरण की गर्जना लो !

यह तुम्हारी ही तपस्या,
युगों की सुलझी समस्या,
कोटि-शीशों की अयाचित नव-समर्पण साधना लो

हे अहिंसा के पुजारी !
प्रणति हो कैसे तुम्हारी ?
मौन प्राणों की निरन्तर स्नेहमय नीराजना लो

लहरता नभ में तिरंगा,
लहरती है मुक्ति गंगा,
हे भगीरथ ! भक्ति भागीरथी की आराधना लो !

असमय संघर्ष

[कांग्रेस के विरुद्ध हिन्दू-महासभा के सत्याग्रह करने पर लिखित]

आजादी के उषःकाल की
हुई न अब तक अगवानी,
यह असमय संघर्ष तुम्हारा
यह असमय रण की वाणी!

अभी-अभी तो अपने घर में
आजादी आने को है,
अभी-अभी तो कालरात्रि भी
अंबर से जाने को है,

अभी-अभी तो शासन सत्ता
हाथों में आना ही है,
नया संतुलन, नई व्यवस्था,
नया सृजन लाना ही है।

क्यों इतनी शीघ्रता तुम्हें
कुछ बात नहीं जाती जानी,
यह असमय संघर्ष तुम्हारा,
यह असमय रण की वाणी!

हुआ कौन अभिनव प्रहार है
जो इतना विक्षोभ हुआ?
इन मंगल घड़ियों में अपनों से
लड़ने का लोभ हुआ!

अब तक तुम थे मौन, कौन सी
पीड़ा अब झनकार उठी?
आज मुक्ति के पुण्य पर्व में
रणभेरी हुंकार उठी!

तुम्हें नहीं शोभा देती है,
यह असमय की कुर्बानी!
यह असमय संघर्ष तुम्हारा,
यह असमय रण की वाणी!

बुरा न मानों, तो पूछें
तुमने कितना बलिदान किया?
बुरा न मानों तो पूछें
कितने शीशों का दान दिया?

बुरा न मानों, तो पूछें
अब तक क्यों नीरव गर्जन था?
जब नृशंसता बर्बरता का
घर में भीषण तर्जन था?

जब हम रण से हटे, बढ़े तुम
लिये धनुर्धर का पानी।
यह असमय संघर्ष तुम्हारा,
यह असमय रण की वाणी!

ठहरो ज़रा बनो मत आतुर
कुछ तो सोच विचार करो
जनमत जाग्रत करो जाति में
नया रक्त संचार करो।

रक्त तुम्हारा ही बहता है
हम में, घायल प्राणों में,
अभी पड़ा बंगाल और
पांचाल विषबुझे बाणों में!

आजादी की पायल की
झनकार न तुमने पहचानी!
यह असमय संघर्ष तुम्हारा
यह असमय रण की वाणी!

तरुणाई का तकाज़ा

तरुणाई का आज तकाज़ा—
चुप रहना है पाप यहाँ!
जो जी में आवे न, कह सके
वही दुसह संताप यहाँ!!

तरुणाई का आज तकाज़ा
जब जग भय से मौन रहे—
शीश हथेली पर ले करके
खुलकर खेले सत्य कहे!

तरुणाई का आज तकाज़ा
माँ बहनों की लाज जहाँ,
लूट रहे हों अत्याचारी
निर्जन पाकर आज जहाँ;

हिंसा और अहिंसा की
चर्चा करने का समय नहीं,
सधवा का सिंदूर दूर होने
के पहले जूझ वहीं।

तरुणाई का आज तकाज़ा
मृत्यु मिले या जीवन हो,
कायरता से किन्तु कलंकित
कभी न अपना यौवन हो!

तुझे शपथ है

तुझे शपथ है, देश भक्ति की
देश भक्ति के नारों की!
तुझे शपथ है, कसी हुई
जंजीरों की झनकारों की!

तुझे शपथ है, बँधे प्रतिज्ञा
के लोहे के तारों की!
तुझे शपथ है, बेगुनाह
बेवाओं की चीत्कारों की!

तुझे शपथ है एक साथ,
जीने मरने वाले क्षण की।
तुझे शपथ है, भरे अभी तक
नहीं गुलामी के व्रण की!

आजादी के लिए अभी
आगे लड़ने वाले रण की!
हँसते हुए झूलने वाले
फाँसी के महान क्षण की!

तुझे शपथ है आजादी की,
ओ जाँबाज जवाँ मेरे!
बुझा आग बरबादी की,
जो है तेरे घर को घेरे!

तुझे शपथ है, दृश्य देख मत
जननी की बरबादी का,
पहले अपना काट शीश,
फिर काट शीश आजादी का!

लौहपुरुष !

लौहपुरुष सरदार ! करूँ वंदन
तेरा किन शब्दों में ?
राष्ट्र पुरुष तुझसे मिलते हैं
किसी राष्ट्र को अब्दों में।

तेरा गर्जन एक कि
निर्बल में नवीन बल आता है!
तेरा वर्जन एक कि
बैरी बढ़ पीछे मुड़ जाता है!

तू असीम है धैर्य कि साहस
बढ़ जाता है प्राणों में।
तू असीम है शौर्य कि पानी
चढ़ जाता है वाणों में।

जब तक अचल हिमाचल सा
तू प्रहरी है रक्षा में लय,
तब तक कैसी मन में चिन्ता
तब तक कैसा मन में भय ?

सावधान !

सावधान मेरे सेनानी।

इधर युद्ध है, उधर युद्ध है,
प्रतिपल पथ हो रहा रुद्ध है,

आमंत्रित कर रहे पराजय,
प्रतिक्षण तुम करके नादानी।
सावधान मेरे सेनानी।

कब तक क्रूर प्रहार सहोगे ?
कब तक अत्याचार सहोगे ?

कब तक हाहाकार सहोगे ?
उठो राष्ट्र के हे अभिमानी।
सावधान मेरे सेनानी।

विजय उसी की जिसमें बल है,
संधि सदा करता दुर्बल है,

तलवारों की प्यास बुझाता
केवल तलवारों का पानी।
सावधान मेरे सेनानी

अखंड ज्योति

[मेरठ से जयपूर तक स्वतंत्रता की अखंड ज्योति की रथयात्रा पर लिखित]

जगे अखंड ज्योति अपनी !
मंगलमय मधुमय किरणों से
पुलकित हो अंबर अवनी !

यह स्वतंत्रता की शुचि ज्वाला,
भरे सदा प्राणों का प्याला,
मंद न कभी प्रगति अपनी हो
आयें बाधायें कितनी ?
जगे अखंड ज्योति अपनी !

तीस

यह जनता की ज्योति पताका
सृजन करे नवयुग का साका,
जगमग हो जनगण का जीवन
जगमग जनता की जननी !
जगे अखंड ज्योति अपनी !

जहाँ जहाँ जाये यह दीपक
भक्ति भावना का उद्दीपक,
मरुथल में खिल उठें कमलदल
हो इतनी मधुधार घनी !
जगे अखंड ज्योति अपनी !

ऊपर लहरे तरल तिरंगा
नीचे बहे ज्योति की गंगा
झाँकी देख अलौकिक माँ की
रवि शशि भी बन जायँ धनी !
जगे अखंड ज्योति अपनी !

इसमें कभी स्नेह यदि कम हो,
यदि तम के घिरने का भ्रम हो,
कोटि कोटि प्राणों का घृत दे
रखें चिरंतन ज्योति बनी !
जगे अखंड ज्योति अपनी !

मंगल गीत

गाओ मंगल गीत रागिनी !
खिली अरुण ऊषा अम्बर में
चली दुकूल समेट यामिनी !
गाओ मंगल गीत रागिनी !

पावन पर्व युगों में आया,
पुलकित बने प्राण मन काया;
गूँज रही आनन्द भैरवी
मंद हुई करुणा विहागिनी !
गाओ मंगल गीत रागिनी !

रम्य राष्ट्र भाषा के रथ में
चली नागरी चढ़ भव पथ में,

हिन्दी बन ललाट की बिन्दी
बना रही भू को सुहागिनी!
गाओ मंगल गीत रागिनी!

मेरी स्वतंत्रता का नव शिशु
जन्म ले रहा बनकर नव विधु,

जनता जलधि हिलोर ले रहा
ले सुख की लहरें सुहासिनी!
गाओ मंगल गीत रागिनी!

जय हो इस पावन तम क्षण की,
जय हो जनता के जीवन की,

जय हो इस अमृत बेला की
नित नव मधु सौरभ विकासिनी!
गाओ मंगल गीत रागिनी'

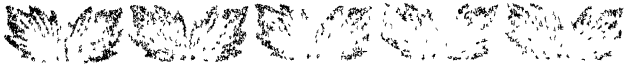

स्वतंत्रता के पुण्य पर्व पर

साज लो सितार तार, आ रही स्वतंत्रता,
बाजे सरगम बहार, आ रही स्वतंत्रता।

आज की उषा नवीन, आज की दिशा नवीन,
आज किरन किरन थिरक रही ले प्रभा नवीन,
आज श्वास है नवीन, आज की पवन नवीन,
प्राण-प्राण में पराग, सौरभ, स्पन्दन नवीन।

नयन पथ रहे निहार, आ रही स्वतंत्रता,
साज लो सितार तार, आ रही स्वतंत्रता।

जगमगा उठी अपूर्व कोटि दीप आरती,
स्वर्गलोक से चली सँवार हंस भारती,
स्वर्ण-कलश लिये गंग, यमुन अर्घ्य ढारती,
हिम-किरीटिनी विशुभ्र रत्न राशि वारती।

पथ-पथ पर हीरहार, आ रही स्वतंत्रता,
साज लो सितार तार, आ रही स्वतंत्रता।

सजल सफल हुई आज, ही पुनीत साधना
गूँज रही कीर्ति-कथा बन, अतीत-यातना,
उठ खड़ी हुई अभीष्ट सिद्धि लिये प्रार्थना,
मूर्ति बन रही स्वदेश की स्वतंत्र भावना।

साज लो शृंगार हार, आ रही स्वतंत्रता
साज लो सितार तार, आ रही स्वतंत्रता।

बदल रही आज धरा, बदल रहा आसमान
बदल रहे सूर्य, चन्द्र, बदल रहा है जहान
बदल रहे ग्रह-खगोल, बदल रहा विधि-विधान
खुल रहा स्वतंत्र राष्ट्र का नवीन पट महान।

पग-पग जगमग अपार, आ रही स्वतंत्रता
साज लो सितार तार, आ रही स्वतंत्रता

दिन है बन्धनविहीन, रजनी बन्धनविहीन,
आज सभी कार्यकला अपनी बन्धनविहीन,
जननी बन्धन विहीन, धरणी बन्धन विहीन,
बह रही स्वतंत्रता समीर देश में नवीन,

उमड़ी मकरन्दधार, आ रही स्वतंत्रता,
साज लो सितार तार, आ रही स्वतंत्रता।

यह स्वतंत्रता की अरुण उषा

यह स्वतंत्रता की अरुण उषा
है लगी क्षितिज पर मुसकाने,
जो सपने थे इस जीवन के
वे लगे सत्य बन इठलाने;

है छिड़ा भैरवी राग आज
लेकर प्राणों का मधु कुंकुम,
मन की मीड़ों पर पीड़ा को
हैं लगे प्राण भी सहलाने;

तृण तृण में आज नया उत्सव
मंगल अभिनव शृंगार लिए
जिन तरु लतिकाओं को सींचा
उन पर फल फूल लगे आने!

जननी के शिर पर है जगमग
हिन्दी बनकर सुहाग बिंदी
जन मन के प्राणपद्म खिलकर
हैं लगे सुरभि मधु सरसाने।

एशिया खंड का गौरव बन
फहराता अपना जयकेतन,
अभिनंदन की ध्वनियाँ, मन की
हैं लगी बात को दुहराने!

जननी का हेमकिरीट
जवाहर की प्रदीप्ति से चमक रहा,
हैं देश विदेश खड़े उत्सुक
उस छवि के दर्शन को पाने

वह वर्गहीन नव स्वर्ग आज
इस भूतल में ले रहा जन्म
जिसमें बसने के लिए देवता
लगे आज फिर ललचाने!

साकार हुई साधना अर्चना आज
सभी के जीवन की,
जननी की जयध्वनि से नभ में
है चला नया नभ बस जाने;

बनकर वितान नव गौरव के
नूतन विधान के छंद खिले
कल्याण लिए है चली अमा भी
आज पूर्णिमा बन जाने!

चित्रकार—श्री सुधीर खास्तगीर के सौजन्य से

जिनका श्रम है उनकी धरती
जिनका हल है उनकी धरती,
इतने दिन बाद अभागों को
सौभाग्य चला है अपनाने

जिनका श्रम है उनकी धरती,
जिनका हल है उनकी धरती
इतने दिन बाद अभागों को
सौभाग्य चला है अपनाने;

अब सृजन करो अपने मन का भव
ले वैभव के सुख साधन,
ललकार रहा है वर्तमान
हैं कहाँ देश के दीवाने ?

अवनी अपनी, अंबर अपना,
अपना सब कोना कोना है
भारत के भाग्यविधाता !
आओ चलें तिरंगा फहराने !!

गीत

जय स्वतंत्र भारत, जय जननी, जय नव भारत हे!

जय नवीन आकाश धरा नव,
चंचल अंचल, हर्ष भरा भव,
जय विमुक्त विहँगों के कलरव,

नव जीवनमय, नव चेतन मय, जय नव जाग्रत हे!
जय स्वतंत्र भारत, जय जननी, जय नव भारत हे!

जय नवीन ऊषा नव संध्या,
नव स्वप्नों की रजनी गंधा,
जय हिमाद्रि नव, जय नव विंध्या,

जय नवीन रथ, जय नवीन पथ, जय नव गति रत हे!
जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी, जय नव भारत हे!

जय नव स्वर की नवल गर्जना,
जय नव कर की नवल सर्जना,
जय नव शिर की नवल अर्चना,

जय नव जन मन, जय नव पल काया, तन मन उन्नत हे!
जय स्वतंत्र भारत, जय जननी, जय नव भारत हे!

मुक्तिपर्व

मुक्ति के मंगल दिवस की
आज पूजन अर्चना है।
मुक्ति के नूतन दिवस की
आज नूतन वंदना है!

धन्य यह दिन, धन्य रजनी।
बनी बंधन हीन जननी;

आज के दिन पर निछावर,
युगों की तप साधना है!
मुक्ति के नूतन दिवस की
आज नूतन वंदना है!

यह अमर है दिवस अपना,
जब बना साकार सपना;

यह अमर पाया, अमर
बलियों की मधुरतम कल्पना है!
मुक्ति के मंगल दिवस की
आज पूजन अर्चना है!

देख नव रवि रश्मि उज्ज्वल,
प्राण पद्मों के खिले दल,

वह चली स्वच्छंद मारुत
मंद ले मधुसर्जना है!
मुक्ति के मंगल दिवस की
आज पूजन अर्चना है!

युगों की सुलझी समस्या,
यह शहीदों की तपस्या,

यह स्वराज्य शिखर
उन्हीं की नींव पर उठकर तना है!
मुक्ति के मंगल दिवस की
आज पूजन अर्चना है!

राष्ट्र के अभिमान जागो,
राष्ट्र के बलिदान जागो,

आज पुरुष प्रयाण की फिर
उठ रही जयगर्जना है!
मुक्ति के मंगल दिवस की
आज पूजन अर्चना है!

मुक्ति का मणिमुकुट अनुपम,
मलिन कर पाये न तमभ्रम,

राष्ट्र की तुमको शपथ,
यह राष्ट्र की दृढ़ याचना है
मुक्ति के मंगल दिवस की
आज नूतन अर्चना है!

जयकेतन

फहरा, फिर जयकेतन फहरा!
तरल त्रिवेणी सा तिरंग ध्वज,
इन्द्र धनुष बन नभ में छहरा!
फहरा, फिर जयकेतन फहरा!

आया मुक्ति-पर्व का मेला,
लेकर भक्ति, गर्व की वेला,

ले आनन्द हिलोर सिन्धु की,
जन-जन में नव जीवन लहरा!
फहरा, फिर जयकेतन फहरा!

धरा हँसी, अम्बर मुसकाया,
दिग दिगन्त ने सुरभि लुटाया,

कंचन किरणों ने जननी का
हेमकिरीट रंग दिया गहरा।
फहरा, फिर जयकेतन फहरा!

कोटि-कोटि कंठों का गर्जन,
कोटि-कोटि शीशों का अर्पण,

कोटि-कोटि प्राणों में प्रण बन
देता है भारत का पहरा!
फहरा, फिर जयकेतन फहरा!

वज्रपात

आज देश पर अनभ्र वज्रपात है हुआ,
आज देश का अमूल्य प्राण मृत्यु ने छुआ,
बन अमृत जिला रही कि जिस फकीर की दुआ,
आज वही महाप्राण देश में रहा नहीं!

घिर गया महान अन्धकार आज देश में,
घाव है असीम हुआ इस तरह स्वदेश में,
है बुझ गया चिराग काल छद्म वेश में,
लड़खड़ा रही जबान, जा रहा कहा नहीं!

कोटि-कोटि हैं, मगर वही न एक आज है,
कोटि-कोटि हैं, मगर वही न रहा राज है,
कोटि-कोटि हैं, मगर रहा न शीश ताज है,
एक पर करोड़ हों निसार, वह चला गया!

लाल रक्त से रँगा निकल रहा विहान है,
आसमान रो रहा, तड़प रहा जहान है,
है समस्त देश बन गया महा मसान है,
आह! आज राष्ट्र पिता राष्ट्र से छला गया!

महानिर्वाण

चले त्याग तन राम, अयोध्या
में है हाहाकार मचा।
शोक सिन्धु में डूब रही है धरा
सके अब कौन बचा ?

वृन्दाबन, गोकुल अनाथ है
है अनाथ भारत सारा,
मोहन छोड़ चला व्रजमंडल,
रोके कौन अश्रु - धारा ?

लाक्षागृह में आग लगी
तब नहीं, आज हम भस्म हुए!
भस्म हो गये आज युधिष्ठिर
मृतक पिण्ड को कौन छुए ?

चढ़ा आज ईसा शूली पर
तन से रक्त प्रवाह बहा।
फिर भी क्षमा दया का मंडल
मुखमंडल को घेर रहा।

वह सुकरात पी गया विष का
प्याला, आँखें बन्द हुईं।
जो मिट्टी का पिण्ड उठा,
उज्ज्वल आत्मा स्वच्छंद हुई।

फाँसी पर चढ़ गया आज,
मंसूर विश्व पर मुसकाता,
व्योम सहम है रहा धरा का
रस समस्त सूखा जाता।

बोधिसत्त्व ने कुशीनगर में,
आज महानिर्वाण लिया।
विधवा - वसुन्धरा रोती
बापू ने महाप्रयाण किया।

सजी आज किस की अर्थी है—
वही क्रूर कैसी आँधी ?
भारत का सौभाग्य सूर्य हो गया
अस्त, जाते गाँधी !

ठहरो, चिता लगाओ मत,
ओ निर्मम देश ! महात्मा की,
एकबार तो चरण - धूलि
ले लेने दो पुण्यात्मा की !

धू-धू जला शरीर, हो गई,
राख महामानव काया,
आह अभागे देश ! सभी कुछ,
खोकर तूने क्या पाया ?

रो न, क्षुब्ध हो मत इतना,
यह धरती यह आकाश फटे!
श्रद्धांजलि दे, अश्रु रोक ले;
तब कुछ हाहाकार घटे।

है असीम बन गई आज,
उस तेरे बापू की काया,
अमर प्रकाश पुञ्ज बनकर,
वह अंबर अवनी में छाया!

देख, उसी की मूर्ति रमी है;
आज प्राण के कण-कण में,
देख, उसी की ज्योति खिली है,
कोटि-कोटि जनगण मन में।

खुला स्वर्ग का वातायन,
बापू है तुझे निहार रहा!
हो अधीर मत राष्ट्र, तुझे वह
अब भी खड़ा पुकार रहा!

बलि हो जाओ स्वयं; नहीं
अब मानव का बलिदान करो!
करो सत्य का वरण, अहिंसा
के पथ पर प्रस्थान करो!

तुम भी मृत्युञ्जय हो मानव,
तुम महात्मा की आत्मा!
स्नेह-सुधा बरसाओ जग में,
हँसे धरा में परमात्मा।

आज राष्ट्र के कण कण को गांधी की मूर्ति करेंगे हम !

जिसके बल पर उठे, बढ़े हम,
हमने रण हुङ्कार किया !
जिसके बल पर जिये-मरे हम
सौ-सौ संकट पार किया !

जिसके बल पर वजय मुकुट से
जननी का शृंगार किया !
जिसके बल पर हो स्वतंत्र,
भारत का जयजयकार किया !

वही शान्ति की मूर्ति प्राण की
स्फूर्ति, राष्ट्र पतवार गया !
गया सत्य का तेज, अहिंसा का
उज्ज्वल अवतार गया !

आज कौन है शेष ? देश ! जो,
अब फिर तेरा त्राण करे ?
जन जीवन के लिये स्वयं यों
बलिवेदी पर प्राण धरे ।

खंड खंड हो धरा, धैर्य तू
किसके बल पर है पाती ?
अधम ! तुझे क्या मिला आज,
लेकर के जान महात्मा की ?

यह घातक प्रहार । यह गोली,
लगी न आज महात्मा को !
आज दैत्य ने ललकारा है हम
सब के परमात्मा को !

चला निगलने महात्मा को
महा मृत्यु की छाया में ।
अविनश्वर है छिपा किन्तु
इस नर की नश्वर काया में !

मर कर भी है अमर महात्मा,
जननी के जन जन मन में
अक्षय सिंहासन है उसका
प्राण प्राण में, कण कण में,

यदि हममें कुछ भी कुलीनता
यदि हममें कुछ भी पानी !
इस दुख से विचलित न बनेंगे
हो कितनी ही कुर्बानी !

खड़े रहेंगे आज अडिग हो
जिस पथ पर हम डटे हुए !
खड़े रहेंगे आज अचल हो
जिस प्रण पर हम डटे हुए !

आह ! आत्म-हंता ! ले आ
उठ रही आज है वह आँधी !
एक नहीं, चालिस करोड़
सामने खड़े तेरे गांधी !

जो गांधी ने कहा, उसी की
तिल-तिल पूर्ति करेंगे हम !
आज राष्ट्र के कण कण को,
गांधी की मूर्ति करेंगे हम !

उद्बोधन

हिम्मत हार न मेरे देश!

सच है तेरे उठे महात्मा,
सच है आज न वह पुण्यात्मा,
प्राण-प्राण में किन्तु, उसी की प्रतिमा सजी अशेष!
हिम्मत हार न मेरे देश!

सच है यह, वह शक्ति उठ गई
किन्तु न अपनी भक्ति उठ गई
जन्मभूमि की भक्ति शक्ति देगी फिर हमें विशेष!
हिम्मत हार न मेरे देश!

सच है यह घन अंधकार है,
नहीं सूझता आर पार है,

पर सम्मुख पावन-प्रकाश है बापू का उपदेश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

अब आँसू से भिगो न अंचल,
मत आँखों से भिगो धरातल,

खो न चेतना दुख असीम में, यही वीर का वेश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

अनुशोचन उनका जो कायर,
अनुशोचन उनका जो पामर,

व्यथित न कर बापू की आत्मा, कर क्रन्दन ध्वनि शेष!
हिम्मत हार न मेरे देश!

आज गर्व कर महा तेज पर
जो सोया है अमृत सेज पर!

मृत्युंजय वह अजर-अमर, सुन गीता का संदेश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

हम सब ऐसी करें साधना
जन-जन में हो प्रेम भावना

जननी जन्मभूमि की जय हो, जीवन का उद्देश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

वह बापू की आत्मा बोली

देवदास गांधी न बोलते
वह बापू की आत्मा बोली,
प्राण प्राण में, कण कण में फिर
वह मंगलमय छाया डोली;

सभी नहीं हिन्दू हत्यारे
हत्यारी न राष्ट्र तरुणाई,
मत कलंक का पंक उलीचो,
उन पर स्वयं जो कि मृत भाई;

आज व्यर्थ है क्रोध, व्यर्थ
प्रतिशोध आज कुछ पा न सकोगे,
आग लगा कर भी जल-थल में
बापू को लौटा न सकोगे!

बापू का बलिदान माँगता है
प्रण आज तुम्हारा निश्छल,
रँगो न हिंसा के शोणित से
भारत माता का शुभ्रांचल!

हे बापू की आत्मा बोलो
मेरे तरुण महात्मा बोलो,
इस विषाक्त जन जन के मन में
तुम अमृत के रसकण घोलो,

इस विनाश की महा घड़ी में
केवल तुम्हीं ज्योति की रेखा
महा मृत्यु के अंधकार में,
जिसने परम सत्य को देखा,

उठो आज जनता से ऊपर
उठो आज सत्ता से ऊपर,
गूँजे अभय तुम्हारी वाणी
उतरे सत्य स्वर्ग से भू पर!

कैसा वसन्त कैसी होली ?

कैसा वसन्त ? कैसी होली ?
हो रही आज जड़ है बोली !

हम खेल चुके हैं अभी फाग,
छूटे न रक्त के अभी दाग,
फिर धधकाओ मत अभी आग,

रहने दो आज रंग-रोली !
कैसा वसन्त ? कैसी होली ?

जिस देश राष्ट्र का राष्ट्रपिता
चढ़ चला अभी है अग्नि चिता,
वे कैसे जीवन रहे बिता ?
माँ ने सिर की रोली धो ली।
कैसा वसन्त ? कैसी होली ?

क्या और जलाना रहा शेष,
हम जला न पाये राग-द्वेष,
कर दिया भस्म सुन्दर स्वदेश,
हिंसा से रँग माँ की चोली।
कैसा वसन्त ? कैसी होली ?

लाओ न अबीर, आज कुंकुम,
लाओ अमृत अन्तर से तुम,
जन-जन में जगे प्रेम अनुपम,
तब हो वसन्त, तब हो होली।
कैसा वसन्त ? कैसी होली ?

श्रद्धांजलि

यदि न अहिंसा के द्वारा
होती स्वतन्त्रता प्राप्त,
तो न राष्ट्र के प्राणों में
होती सहिष्णुता व्याप्त!

होती वह प्रतिक्रिया
जहाँ भी होता कुछ संघर्ष!
शस्त्रों से ही नित्य निकलते
वादों के निष्कर्ष!!

हिंसा में अभ्यस्त पाणि,
शोणित में डूबे प्राण
हिंसा से ही अपने हित का,
करते रक्षण त्राण!

आज देश में है जो कुछ भी
सुख समृद्धि या शान्ति
एक अहिंसा से सुखमय है
जीवन में जन क्रान्ति!!

ओ मानव! गांधी का सबसे
बड़ा यही आराधन!
पशु बल त्याग, आत्मबल से
नित करो विजय सम्पादन!

राष्ट्रपिता की देन राष्ट्र को
सबसे बड़ी अहिंसा
जन जन में सद्भाव जगे
जागे न कभी भी हिंसा!

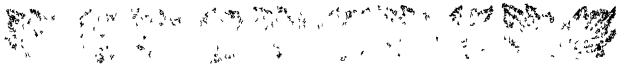

पंद्रह अगस्त

यह स्वतंत्रता की वर्षगाँठ है प्रथम प्रथम,
मैं कैसे इसे मनाऊँ मन में है दिग्भ्रम।

आनंद लहर यदि एक ओर है आ जाती,
वेदना विपुल दूसरी ओर तो छा जाती,

मैं दीप जलाऊँ या कि बुझाऊँ है संभ्रम,
यह स्वतंत्रता की वर्षगाँठ है प्रथम प्रथम!

यह प्रात रात को लेकर अन्तर में आया,
मेरे सुख की लहरों पर है दुख की छाया!

मैं ध्वजा उड़ाऊँ या झुकाऊँ है मति भ्रम,
यह स्वतंत्रता की वर्षगाँठ है प्रथम प्रथम!

मल्हार मेघ में बजने लगता है विहाग,
मेरी आजादी के अंचल में लगा दाग,

फिर भी गाओ तुम विजय गीत तज करके भ्रम !
यह स्वतन्त्रता की वर्षगाँठ है प्रथम प्रथम !

उस महामहिम के लिए नहीं रोना-धोना,
अपमान बड़ा उसका मन में दुर्बल होना,

आँसू पीकर मुसकाना है वीरों का क्रम,
यह स्वतन्त्रता की वर्षगाँठ है प्रथम प्रथम !

दीपक न जलें यह काफी शोक प्रदर्शन है
दीपक न जलें यह काफी मन का क्रन्दन है,

पर बुझे नहीं मन, बुझे नहीं वह महा आग,
पर बुझे नहीं मन, बुझे नहीं वह महा त्याग,

जो आग दे गया रक्त दान दे महाभाग,
जिससे जगमग ज्योतिर्मय जननी का सुहाग;

तुम इसे मनाओ दे प्राणों का मधु कुंकुम।
यह स्वतंत्रता की वर्षगाँठ है प्रथम प्रथम !

विजय पर्व

विजयोत्सव के पुण्य पर्व में,
जागे हिन्दुस्तान हमारा ।

इसी पुण्य बेला में रघुपति ने
रण का संधान किया था,
इसी पुण्य बेला में रघुपति ने
वह अमर प्रयाण किया था,
इसी पुण्य बेला में रघुपति ने
जनगण का त्राण किया था,

भस्म हुई रावण की लंका,
गूँजा जय जय गान हमारा,
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में,
जागे हिन्दुस्तान हमारा ।

यह वह मंगल घड़ी, अमंगल
जब भव के थे दूर भगाये,
यह वह मंगल घड़ी, कवच सज
जब हमने रण शंख बजाये—
यह वह मंगल घड़ी, कि प्राणपर
जब हमने थे प्राण चढ़ाये,

बजा विजय का डंका, फहरा
नभ में विजय निशान हमारा
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में,
जागे भारतवर्ष हमारा ।

घेर रहा है दशो दिशा से
आज राक्षसों के दल का दल,
घेर रहा है दशो दिशा से
आज राक्षसों के छल का बल,
घेर रहा है दशो दिशा से
आज नाश का नव दावानल,

कोटि कोटि चरणों की ध्वनि में;
गरजे जय-अभियान हमारा,
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में,
जागे भारतवर्ष हमारा ।

जागो वीर जाति के गौरव
जागो जननी के अभिमानी,
जागो वीर वंश के पौरुष,
जागो प्राणों के बलिदानी !
जागो शिवा, प्रताप कहाँ हो ?
जागो झाँसीवाली रानी !

कोटि कोटि कंठों की ध्वनि में
जागे फिर अभिमान हमारा,
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में,
जागे हिन्दुस्तान हमारा !

जागो हे पांचाल निवासी
जागो हे गुर्जर, मद्रासी
जागो बंगभंग के द्रोही
जागो मध्य देश के वासी,
जागो क्षत्रिय, सिक्ख, मरहठे
जागो रण व्रण के अभ्यासी !

कोटि बाहु के कोटि खड्ग में,
चमके अभ्युत्थान हमारा,
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में,
जागे हिन्दुस्तान हमारा ।

हर हर महादेव जय जय !

प्रयाण-गीत

आज करो नूतन आराधन,
आज करो नूतन तपसाधन,

हृदय हृदय हो शक्ति उदय !
हर हर महादेव जय जय !

रक्त रक्त में हो नव स्पन्दन,
प्राण प्राण में नव आन्दोलन,

जन जन में जीवन निर्भय !
हर हर महादेव जय जय !

स्वर स्वर में हो सागर गर्जन,
कर कर में हो नूतन सर्जन,

उर उर में अमृत अक्षय !
हर हर महादेव जय जय !

निर्बलता कातरता मन की,
ध्वंस करो कादरता मन की,

करो अगम साहस संचय !
हर हर महादेव जय जय !

शमन करो यह पीड़ा क्रन्दन,
मानव का नभ-भेदी रोदन,

उठे बाहु बन खड्ग वलय !
हर हर महादेव जय जय !

पग पग में छाया कोलाहल,
डग मग पग न कहीं हो निर्बल,

सम्मुख रहे लक्ष्य निश्चय !
हर हर महादेव जय जय !

निज संस्कृति निज जाति न भूलो,
निज पौरुष निज ख्याति न भूलो,

सृजन रहे या रहे प्रलय !
हर हर महादेव जय जय !

स्वतन्त्रता का उज्ज्वल दिनकर
चमके नया रक्त बल लेकर,

गहन तिमिर हो पल में क्षय !
हर हर महादेव जय जय !

राजर्षि राष्ट्रपति

आज युगों के बाद, राष्ट्र में
जनता की हुंकार उठी
जय भारत की, जय गांधी की,
अंबर तक झंकार उठी
मेरा कौन, कौन तेरा है,
चोटी पर ललकार उठी,
कोटि करों ने तुझे वर लिया,
हर्ष ध्वनि की ज्वार उठी,

जय यह तेरी नहीं, विजय है,
यह जनमत की बहुमत की,
जय यह तेरी नहीं, विजय है,
यह स्वतंत्र नव भारत की!

बन उत्तर प्रदेश का गर्जन तू,
जग को ललकार चुका,
बन पावन प्रदेश का सर्जन,
कर माँ का शृंगार चुका,

आगे बढ़, सबसे आगे,
प्रत्यंचा में टंकार हुई,
जननी की प्रतिमा सँवारने,
तेरी दूर पुकार हुई;

गंगा यमुना अमृत दुग्ध दे,
तुझको बहुत दुलार चुकी,
गोदावरी गोद लेने को,
तुझको आज गुहार उठी,

जिस दिन चला त्याग सचिवालय,
प्रतिध्वनि तेरे साथ हुई
नहीं विरोधी दल ही केवल,
मुसलिम लीग अनाथ हुई!

ऐ मेरे राजर्षि! अधिक इससे,
क्या होगा अभिनंदन?
नहीं भक्त ही, पर विभक्त भी,
करते हैं तेरा वंदन!

तू सुमेरु सा रहा अचल ही
बही प्रबल झंझा आँधी
तेरा मस्तक नहीं, झुका
तेरे प्रण पर, मेरा गांधी!

पा तेरा अनुराग त्याग फिर से
हिलोर ले तरुणाई,
भर उमंग, फहरा तिरंग ध्वज,
उठे राष्ट्र ले अँगड़ाई!

राष्ट्र-ध्वजा

राष्ट्रध्वजा की करो
नवीन आज अर्चना,
राष्ट्रध्वजा की करो
नवीन आज वंदना,
राष्ट्रध्वजा की करो
नवीन आज प्रार्थना,
राष्ट्रध्वजा की करो
नवीन आज कामना!

यह धरा उठे, उठे गगन
नया वितान हो!
राष्ट्रध्वजा राष्ट्र का,
अमर विजय निशान हो!

हों सजीव आज वीर
राष्ट्र की निशानियाँ !
चल पड़ें स्वदेश के
लिए मचल जवानियाँ,
आज नया रक्त लिखे
राष्ट्र की रवानियाँ,
जो मिटे कभी न, लिखें
वे अमर कहानियाँ,

चरण - चरण मरण
जी उठे अजेय गान हो,
राष्ट्रध्वजा राष्ट्र का
अमर विजय निशान हो !

रक्त रक्त में नवीन
शक्ति भरी आग हो,
प्राण-प्राण में नवीन
भक्ति, आत्म त्याग हो,
कंठ-कंठ में नवीन
आज राष्ट्र राग हो,
जन्मभूमि का अमर
अचल अमिट सुहाग हो,

प्रहर-प्रहर आज नया
स्वर्णमय विहान हो !
राष्ट्रध्वजा राष्ट्र का
अमर विजय निशान हो !

आज है स्वतंत्र देश
है स्वतंत्र भावना,
आज है स्वतंत्र देश
है स्वतंत्र कल्पना,
आज है स्वतंत्र देश
है स्वतंत्र साधना,
कोटि कोटि कंठ की
स्वतंत्र एक गर्जना,

देश यह महान हो,
कि राष्ट्र यह महान हो
राष्ट्रध्वजा राष्ट्र का अमर
विजय निशान हो।

हम बढ़ें उधर कि जिधर
राष्ट्र की पुकार हो,
हम बढ़ें उधर कि जिधर
राष्ट्र का सुधार हो,
हम बढ़ें उधर कि जिधर
राष्ट्र पर विचार हो,
हम बढ़ें उधर कि जिधर
राष्ट्र पर प्रहार हो,

कोटि-कोटि शीश उठें
बन अभेद्य त्राण हो!
राष्ट्रध्वजा राष्ट्र का
अमर विजय निशान हो!

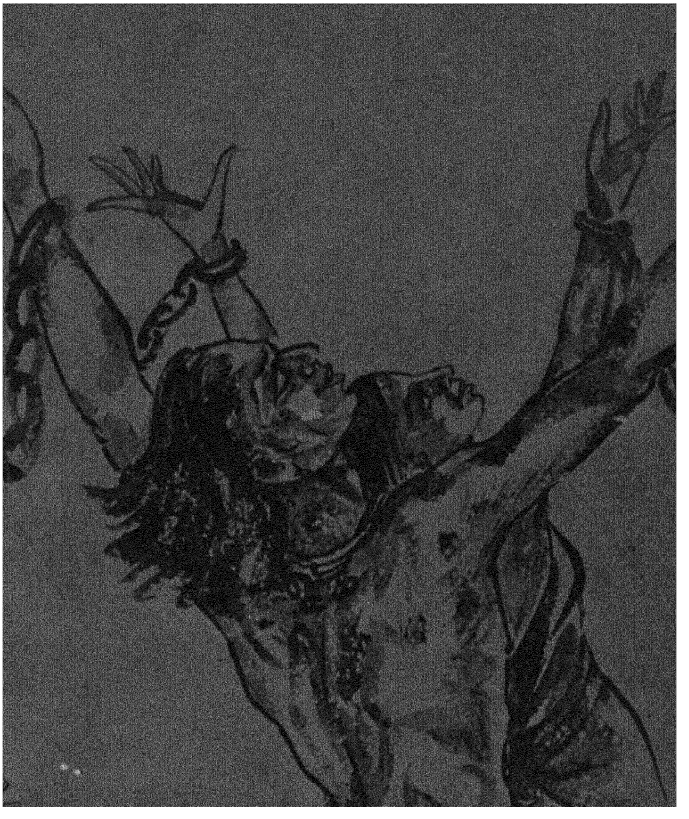

चित्रकार—श्री सुधीर खास्तगीर के सौजन्य से

बदल रही आज धरा बदल रहा आसमान
बदल रहे सूर्य चन्द्र बदल रहा है जहान्
बदल रहे ग्रह खगोल, बदल रहा विधि-विधान,
खुल रहा स्वतंत्र राष्ट्र का नवीन पट महान्।

दीपाली

स्नेह के दीपक गृह गृह जलें।
खिला रहे अपने सुख का शशि,
तम के घन न छलें।

गृह गृह में हो मंगल उत्सव,
नूतन शाली नूतन वैभव,
वसुन्धरा के शस्य श्याम
आंचल में सब जन पलें!

दुरित शमित दुर्भाव दुराशा,
स्नेह आर्द्र हो अपनी भाषा,
ललचे स्वर्ग देख धरती को
अमृत चषक ढलें।

स्नेह के दीपक गृह गृह जलें!